शिवभक्त महाराजा श्वेत

महर्षियों ने लोमशजी से कहा– हम महाराज श्वेत के परम अद्‌भुत चरित्र के विषय में जानना चाहते हैं जिन्होंने अपनी भारी शिवभक्ति के प्रभाव से भगवान् शिव को भलीभाँति सन्तुष्ट किया था। जो लोग भक्तिपूर्वक महादेवजी की आराधना करते हैं, वे ही भक्त हैं, वे ही कर्मयोगी और ज्ञानी हैं।

लोमशजी ने कहा– महर्षियों! राजा श्वेत अपने राज्य में सब प्रकार के भोग भोगते रहे तो भी उनकी बुद्धि सदा धर्म में ही लगी रहती थी। उन्होंने धर्म के अनुसार प्रजा को प्रसन्न रखते हुए समस्त पृथ्वी का पालन किया। वे सत्यवादी, शूरवीर तथा निरन्तर शिवजी के भजन में तत्पर रहनेवाले थे। राजा श्वेत अपनी बढ़ी-चढ़ी शक्ति से राज्य का शासन और भक्तिभाव से भगवान् शिव की आराधना करते थे। इस प्रकार परमेश्वर की आराधना करते-करते महाराज श्वेत की सारी आयु बीत चली। उनके मन में न कभी व्यथा हुई और न शरीर में ही कोई रोग हुआ। ये संसारी उपद्रव महाराज श्वेत को कभी कष्ट नहीं पहुँचाते थे। इनके राज्य में सब लोग निर्भय रहते थे। भगवान् शिव की कृपा से महात्मा राजा श्वेत के राज्य में सब प्रजा सदा मानसिक कष्ट से रहित, आनन्दमग्न तथा सुखी रहती थी। इस प्रकार भगवान् शिव की पूजा में लगे हुए राजा श्वेत के जीवन का बहुत बड़ा समय सफलतापूर्वक बीत गया।

एक दिन की बात है, राजा श्वेत शंकरजी की आराधना में लगे थे। उसी समय यमराज ने उनके पास अपने दूत भेजे। उन दूतों को आज्ञा दी कि चित्रगुप्त के कथनानुसार राजा श्वेत की आयु पूरी हो गयी है, अत: उन्हें शीघ्र ले आओ। 'जो आज्ञा' कहकर दूतों ने उनकी आज्ञा स्वीकार की और राजा को ले जाने की इच्छा से वे भगवान् शिव के मन्दिर में आये। उनके हाथों में काल-पाश था। वे आकृति से भी बड़े भयानक थे। यमदूतों ने शीघ्रतापूर्वक वहाँ आकर देखा, महाराज गहरी समाधि लगाये भगवान् शिव के समीप बैठे थे। उन्हें देखकर उनके मन में ज्यों ही हलचल हुई त्यों ही वे सब दूत चित्रलिखित की भाँति निश्चेष्ट हो गये। अत: यमदूत धर्मराज की आज्ञा का पालन न कर सके। यह सब जानकर यमराज स्वयं ही वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने राजा को सहसा ले जाने के लिये अपना दण्ड ऊपर को उठा रक्खा था। धर्मराज ने देखा, महाबाहु श्वेत शिव-भक्ति से युक्त होकर भगवान् शिव के ही चिन्तन में तत्पर हैं। केवल ज्ञान का आश्रय ले शान्तभाव से विराजमान हैं। राजा को इस रूप में देखकर यमराज के मन में भी बड़ी हलचल हुई। वे अत्यन्त व्याकुल होकर सहसा चित्रलिखित की भाँति हो गये। तदनन्तर प्रजा का विनाश करनेवाले काल भी तत्काल वहाँ आ गये। उन्होंने भी शिवपूजा-परायण राजा को तथा मन्दिर के

द्वार पर खड़े हुए दूतोंसहित यमराज को देखा। उन्हें ऐसा देखकर यमराज से पूछा–'धर्मराज! क्या कारण है जो अभीतक तुम इस राजा को नहीं ले गये। तुम्हारे साथ यमदूत भी हैं, तो भी कुछ डरे हुए से प्रतीत होते हो।'

तब धर्मराज ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया– यह राजा भगवान् शिव का भक्त है, अतः इसका उल्लंघन करना हमारे लिये अत्यन्त कठिन है। त्रिशूलधारी महादेवजी के भय से हम यहाँ चित्रलिखित पुतलों की भाँति खड़े हैं।

यमराज की यह बात सुनकर कालदेवता कुपित हो उठे तथा राजा को मारने के लिये उन्होंने बड़े वेग से ढाल और तलवार उठायी। वे क्रोध में भरकर शिवालय में घुसे। वहाँ उन्होंने देखा, राजा श्वेत एकाग्रचित्त से विशुद्ध ज्ञानस्वरूप, चिन्मय, स्वयंप्रकाश परमात्मा का चिन्तन कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में उन्हें देखकर काल अहंकारवश ज्यों ही उनके पास जाने को उत्सुक हुए, त्यों ही भक्तवत्सल भगवान् शंकर ने अपने भक्त की रक्षा करते हुए तीसरा नेत्र खोलकर काल की ओर देखा। उनके देखते ही कालदेव तत्काल जलकर भस्म हो गये। राजा श्वेत जब समाधि से विरत हुए तब बाह्य ज्ञान होने पर उन्होंने धीरे से आँखें खोलकर देखा। उस समय वहाँ उनके सामने ही कालदेव अद्भुत रूप से जल रहे थे। राजा ने बार-बार उनकी ओर देखा और भगवान् शंकर से इस प्रकार प्रार्थना की– "जगदीश्वर! आप ही सबके रक्षक हैं, आप ही इस जगत् के पिता, माता, सुहृद, सखा, बन्धु, स्वामी तथा ईश्वर हैं। शम्भो! आपने यह क्या किया? किसको मेरे आगे जला दिया? मैं नहीं जानता यह क्या हुआ है और किसने यह बड़ा भारी अद्भुत कार्य कर डाला है।"

इस प्रकार प्रार्थना करते हुए राजा श्वेत का विलाप सुनकर भगवान् शंकर ने कहा–'राजन्! यह काल है; तुम्हारी रक्षा के लिये मैंने इसे जला दिया है।' राजा श्वेत ने पूछा 'भगवन्! इसने ऐसा कौन-सा कुकृत्य किया था, जिससे आपने इसे इस दशा को पहुँचा दिया?' भगवान् शिव बोले–'महाराज! यह संसार के समस्त प्राणियों का भक्षक है। इस समय यह क्रूर काल तुम्हें अपना ग्रास बनाने के लिये आया था। अतः (तुम्हारे जैसे) बहुत-से जीवों का कल्याण करने की इच्छा से मैंने इसे जला दिया है। क्योंकि जो पापी, अतिशय अधर्मपरायण, लोकविनाशकारी तथा पाखण्डी हैं, वे मेरे वध्य हैं।' भगवान् शिव की यह बात सुनकर श्वेत ने कहा– 'भगवन्! काल आपकी आज्ञा शिरोधार्य करके ही लोक में सबको नियन्त्रण में रखता है। आप ही के आदेश से यह तीनों लोकों में विचरता है। इसके डर से ही यह संसार सदा पुण्य-कर्म का अनुष्ठान करता है। इसलिये आप कृपा करके फिर शीघ्र ही इसे जीवित कर दें।' तब शिवजी ने काल को पुनः जीवित कर दिया। तदनन्तर राजा श्वेत ने काल को अपने हृदय से लगा लिया। चेतना लौटने पर काल ने शिव की

स्तुति कर राजा श्वेत से कहा–'राजन्! सम्पूर्ण मनुष्य लोक में तुमसे बढ़कर दूसरा कोई पुरुष नहीं है; क्योंकि तुमने तीनों लोकों के लिये अजेय मुझ काल को भी जीत लिया। आज से मैं तुम्हारा अनुगामी हुआ। महादेवजी की ओर से मुझे अभयदान करो।'

राजा ने कहा– भगवन्! तुम तो साक्षात् शिव के ही एक श्रेष्ठ रूप हो। सम्पूर्ण प्राणियों का पालन तथा संहार तुम्हारा ही स्वरूप है। तुम्हीं सबके नियन्ता हो। इसलिये तुम मेरे परम पूजनीय हो। आत्मसाक्षात्कार के साधन में लगे हुए समस्त पुण्यात्मा पुरुष तुमसे ही भय मानने के कारण विविध भावों से परमेश्वर की शरण लेते हैं।

इस प्रकार धर्मात्मा श्वेत से रक्षित होकर काल ने भगवान् शिव की कृपा प्राप्त की और उसे पुनः नवीन चेतना प्राप्त हुई। तब वे कालदेव यमराज, मृत्यु तथा यमदूतों के साथ भगवान् शिव और महाराज श्वेत को प्रणाम करके अपने निवासस्थान को चले गये। वहाँ उन्होंने सब दूतों को बुला कर कहा– 'दूतगण! संसार में जो लोग विभूति के द्वारा त्रिपुण्ड्र धारण करते हैं, मस्तक पर जटा और गले में रुद्राक्ष माला रखते हैं, ऐसे लोगों को तुम कभी मेरे लोक में मत लाना। जो उत्तम भक्तिभाव से भगवान् सदाशिव का पूजन करते हैं, वे साक्षात् रुद्र के ही स्वरूप हैं। जो मस्तक पर एक रुद्राक्ष धारण करते, ललाट में त्रिपुण्ड्र लगाते तथा जो साधुपुरुष पंचाक्षर मन्त्र का सदा जप करते हैं, वे सब तुम्हारे द्वारा पूजनीय हैं। जिस राष्ट्र, देश अथवा ग्राम में शिव–भक्त नहीं देखा जाता वह श्मशान से भी बढ़कर अशुभ है।'

यमराज ने अपने सेवकों को भी ऐसा ही आदेश दिया। भगवान् महेश्वर की पराभक्ति से युक्त महाराज श्वेत जब काल से निर्भय हो गये तब उन्होंने भगवान् शिव का सायुज्य प्राप्त कर लिया। पवित्र बुद्धिवाले ज्ञानी पुरुषों को भी अनेक जन्मों के पश्चात् भगवान् शिव की भक्ति प्राप्त होती है। मनुष्यों को चाहिये कि वे सदैव भगवान् सदाशिव का सेवन, वन्दन और पूजन करें।

(प्रस्तुत कथा गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के संक्षिप्त स्कंदपुराणांक के माहेश्वरखण्ड–केदारखण्ड के अध्याय 32 से ली गयी है।)

उपर्युक्त कथा के समान ही एक और आख्यान[1] हमें ब्रह्मपुराण में प्राप्त होता है। ब्रह्माजी ने श्वेततीर्थ की महत्ता के संदर्भ में श्वेत के आख्यान का वर्णन नारदजी से इस प्रकार किया है।

पूर्वकाल में श्वेत नाम के एक ब्रह्मण थे, जो महर्षि गौतम के प्रिय सखा थे। वे गोदावरी के तट पर रह कर मन–वाणी तथा क्रिया द्वारा भगवान् शिव का भजन करते थे। वे सदा भगवान् सदाशिव की पूजा और ध्यान में रत रहते थे। शिव के भजन में ही उनकी आयु पूरी हो गयी। तब

1. सम्भवतः कल्पभेद के कारण इन कथाओं में कुछ अन्तर है।

यमराज के दूत उन्हें ले जाने के लिये आये, परन्तु वे ब्राह्मण-देवता के घर में प्रवेश न कर सके। जब ब्राह्मण की मृत्यु का समय व्यतीत हो गया, तब चित्रक ने मृत्यु से पूछा-'मृत्यो! श्वेत का जीवन समाप्त हो चुका है, वह अबतक क्यों नहीं आता? तुम्हारे दूत भी अभीतक नहीं लौटे। ऐसा होना उचित नहीं।' यह सुनकर मृत्यु को बड़ा क्रोध हुआ और वे स्वयं ही श्वेत के घर पर पधारे। उनके दूत भयभीत होकर बाहर ही खड़े थे। उन्हें देखकर मृत्यु ने पूछा-'दूतों यह क्या बात है?' दूत बोले-'श्वेत भगवान् शिव के द्वारा सुरक्षित हैं। हम उनकी ओर आँख उठा कर देख भी नहीं सकते। जिनके ऊपर भगवान् शंकर प्रसन्न हो जायँ, उन्हें भय कैसा।'

तब मृत्यु ने अपना फंदा हाथ में लेकर स्वयं ही ब्राह्मण के घर में प्रवेश किया। ब्राह्मण तो भक्तिपूर्वक भगवान् शिव की पूजा कर रहे थे। उन्हें न तो मृत्यु के आने का पता था और न यमदूतों के। श्वेत के समीप पाशधारी मृत्यु को खड़ा देख दण्डधारी भैरव ने विस्मित होकर पूछा-'मृत्युदेव! यहाँ क्या देखते हो?' मृत्यु ने उत्तर दिया-'मैं श्वेत को ले जाने के लिये यहाँ आया हूँ, अतः इन्हीं को देखता हूँ।' भैरव ने कहा-'लौट जाओ।' परन्तु मृत्यु ने श्वेत पर अपना फंदा फेंका। यह देखकर भैरव कुपित हो उठे। उन्होंने शिव के दिये हुए दण्ड से मृत्यु पर गहरी चोट की। मृत्युदेवता पाश हाथ में लिये हुए ही धरती पर गिर पड़े। मृत्यु को मारा गया देख यमदूत भाग गये। उन्होंने मृत्यु के वध का समाचार यमराज से कहा। यह सुन कर यमराज को बड़ा क्रोध हुआ। उन्होंने बलवान् चित्रगुप्त, अपनी रक्षा करनेवाले यमदण्ड, महिष, भूत, बेताल तथा आधिव्याधियों को शीघ्रतापूर्वक चलने का आदेश दे तुरंत वहाँ से प्रस्थान किया। अपने साथियोंसहित यमराज उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ द्विजश्रेष्ठ श्वेत भगवान् शिव की आराधना में संलग्न थे।

उस समय यमराज तथा भगवान् शिव के पार्षदों में अत्यन्त भयानक संग्राम छिड़ गया। कार्तिकेय ने स्वयं ही शक्ति सँभाली और यमराज के दूतों को विदीर्ण कर डाला। साथ ही दक्षिण-दिशा के स्वामी अत्यन्त बलवान् यमराज को भी मौत के घाट उतार दिया। मरने से बचे हुए यमदूतों ने भगवान् सूर्य को यह सब समाचार कह सुनाया। यह अद्‌भुत बात सुन कर सूर्य समस्त देवताओं और लोकपालों के साथ ब्रह्माजी के समीप आये। फिर ब्रह्माजी, भगवान् विष्णु, इन्द्र, अग्नि, वरुण तथा अन्य बहुत से देवता यमराज के पास गये। वे गोदावरी के तट पर मरे पड़े थे। यमराज को सेनासहित मरा देख देवता भय से व्याकुल हो उठे और हाथ जोड़कर बारंबार भगवान् शिव की प्रार्थना करने लगे।

देवता बोले-भगवन् आपको अपने भक्त सदा ही प्रिय हैं तथा आप दुष्टों का वध किया करते हैं। संसार के आदि स्त्रष्टा नीलकण्ठ! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। ब्रह्मप्रिय! आपको नमस्कार

है। देवप्रिय! आपको नमस्कार है। विप्रवर श्वेत आपके भक्त हैं। इनकी आयु क्षीण हो जाने पर भी यम आदि सब लोग इन्हें ले जाने में समर्थ न हो सके। आपका अपने भक्तों पर ऐसा महान् प्रेम देख कर हम सबको बड़ा संतोष हुआ। नाथ! सचमुच ही आप बड़े भक्तवत्सल हैं। जो लोग आपजैसे दयालु परमेश्वर की शरण में आ गये हैं, उन्हें यमराज भी नहीं देख सकता। यह जान कर ही सब लोग पराभक्ति के साथ आपका भजन करते हैं। शंकर! आप ही इस जगत् के स्वामी हैं। क्या यह बात आप भूल गये? आपके बिना यहाँ व्यवस्था करने में कौन समर्थ हो सकता है।

इस प्रकार स्तुति करनेवाले देवताओं के समक्ष भगवान् शंकर स्वयं प्रकट हो गये और बोले–'देवताओं! तुम्हें क्या दूँ?'

देवताओं ने कहा–देवेश्वर! ये सूर्यपुत्र धर्म हैं, जो समस्त देहधारियों का नियन्त्रण करते हैं। इन्हें धर्म और अधर्म की व्यवस्था में नियुक्त किया गया है। ये लोकपाल हैं। अपराधी और पापी नहीं हैं। अतः इनका वध नहीं होना चाहिये। इनके बिना ब्रह्माजी का कोई कार्य नहीं चल सकता। इसलिये सेना और वाहनोंसहित यमराज को जीवित कर दीजिये।

भगवान् शिव बोले–देवताओं! मेरी बात सुनो–जो मेरे तथा भगवान् विष्णु के भक्त हैं, गौतमी गंगा का निरन्तर सेवन करनेवाले हैं, उनके स्वामी हम लोग स्वयं ही हैं। मृत्यु का उनके ऊपर कोई अधिकार नहीं है। यमराज को तो उनकी बाततक नहीं चलानी चाहिये। व्याधि–आधि के द्वारा उनका पराभव करना कदापि उचित नहीं है। जो मेरी शरण में आ जाते हैं, वे तत्काल मुक्त हो जाते हैं। यमराज को तो चाहिये अपने अनुचरोंसहित उन्हें प्रणाम करें।

'बहुत अच्छा' कहकर देवताओं ने भगवान् शिव की बात का अनुमोदन किया। तब भगवान् शिव ने अपने वाहन नन्दी से कहा–'तुम गौतमी का जल लेकर मरे हुए यमराज आदि के शरीर पर छिड़क दो।' आज्ञा पाकर नन्दी ने यम आदि सब लोगों पर गोदावरी का जल छिड़का। इससे वे जीवित होकर उठ बैठे और दक्षिण दिशा की ओर चले गये। गौतमी के उत्तर तट पर विष्णु आदि सब देवता ठहर गये और देवाधिदेव महेश्वर की पूजा करने लगे। जहाँ मृत्यु देवता मरकर गिरे थे, वह स्थान मृत्युतीर्थ कहलाता है।

(यह आख्यान ब्रह्मपुराण के अध्याय 94 में पाया जाता है। उपर्युक्त कथा गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित कल्याण के संक्षिप्त मार्कण्डेय–ब्रह्मपुराणांक से ली गयी है।)

❀❀❀❀❀❀